क्षेत्रीय अध्ययन एवं अनुसंधानशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर

राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी जी के 71 वीं पुण्यतिथि

क्षेत्रीय अध्ययन एवं अनुसंधानशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर में 30 जनवरी 2019 प्रातः 11:00 बजे राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी जी के 71 वीं पुण्यतिथि का आयोजन किया गया , कार्यक्रम में छात्र–छात्राओं शिक्षकों एवं विभागाध्यक्ष प्रोफेसर मिताश्री मित्रा के द्वारा गॉधी जी के फोटो पर पूजा–अर्जना के साथ खादी की सूत की माला अर्पित करते हुए दीप प्रज्वलित किया गया। तद्उपरांत दो मिनट की मौन श्रध्दांजलि दी गई। कार्यक्रम में छात्रा पूजा देवॉगन के द्वारा महॉत्मा गॉधी के जीवन पर स्वरचित कविता प्रस्तूत की गयी।

अन्य छात्र–छात्राओं एवं शिक्षकगण श्री प्रवीण सोनी, श्री राज कमल रॉय एवं डॉ. नीता मिश्रा के द्वारा महॉत्मा गॉधी जी के कार्यों , उद्देश्यों एवं विचारों पर प्रकाश डाला। विभागाध्यक्ष प्रो. मिताश्री मित्रा ने महॉत्मा गॉधी जी के संकल्पों, आदर्शों एवं ग्राम स्वराज की संकल्पना को प्रस्तुत करते हुए ग्रामीण विकास के महत्व को स्पष्ट किया। साथ ही महॉत्मा गॉधी जी के विचारों के माध्यम से छात्र–छात्राओं को मार्गदर्शन करते हुए महॉत्मा गॉधी जी के आदर्शों को आत्मसात करने का संकल्प दोहराया। अंत में श्री प्रवीण सोनी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की गई।

कविता

जब भारतमॉता के पवित्र तन में, अंग्रेजों ने बेड़ी बाधी थी
सवर्तत्र हा–हाकार मचा रहे, गोरों की आंधी थी।
पोरबंदर में जब जन्म लिय एक वीर महात्मा ने,
नाम था मोहनदास करमचंद गांधी।
पढ़–लिखकर, बैरिस्टर बन आया वो भारत में कहा,
सत्य और अहिंसा ही है मेंरी पूंजी ।
अस्त्रों – शस्त्रों से न वार करूंगा–
मैं तो शांति से इनकी तपस्या भंग करूंगा।
परदेशाी हो तुम परदेश में ही रहना,
स्वदेशी सामान ही है इस्तेमाल के लायक, ये था इसका कहना।
सलाम की बात न कहना हम तुम्हारे गुलाम नहीं ।
अंग्रेजो तुम भारत छोड़ो, नमक पर अधिकार हमारा है।
दलित आंदोलन भी हुए, असहयोग कर चंपारण भी तोला है।
गोली, तोप बंदुकों की ताकत, क्या सच के सामने घातक होगी।
पीड़ा जितनी भी असनिय हो, जीत हमारी ताकत होगी।
था 15 अगस्त 1947 को हमारा ध्वज है फहराया
नतमस्तक हुए हमारी भारत मां के , शिकारियों को ओझल कराया।
घातक अब भी बैठे थे, था 30 जनवरी का दिन छीन लिय बापू को जब, हे राम कहते हुए चल दिए वो
जब उनको गोली मारी थी शोक में डूबा था भारत, महात्मा से ऐसी बिदाई हमने पहली बार जानी थी।

कविता लेखक
पूजा देवांगन
एम.ए. रूरल डेव्हलपमेंट
सेमेस्टर –I

फोटोग्राफ

फोटोग्राफ